Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

नव संस्कृत लेखन में गान्धी चरित

डॉ. अमित कुमार
प्रवक्ता, वैदिक धर्म इण्टर कॉलेज, डुमरी निवास, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 35-39
Publication Issue :
March-April-2022
Article History
Accepted : 02 March 2022
Published : 20 March 2022

सारांश – महात्मा गान्धी का व्यक्तित्व स्वतन्त्रता सेनानियों को सम्पूर्ण भारत की समस्त भाषाओं एवं बोलियों में वर्णित करके सम्पूर्ण समाज को यह बताने का अथक प्रयास किया गया है कि–न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठ, धैर्यशाली, सत्याग्रही, विवेकी, एकता के पक्ष पाती, अहिंसापालक महात्मा गान्धी, अपने विचारों एवं सिद्धान्तों से सदैव हमारे मनमस्तिष्क में स्थान बनाये रखेंगे। उनके विचारों की प्रेरणा से समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवन में चतुर्मुखी उन्नति को प्राप्त करेगा।

मुख्य शब्द – संस्कृत, लेखन, महात्मा गान्धी, भाषा, समाज, सत्यनिष्ठ, सत्याग्रही, धैर्यशाली, न्यायप्रिय, विवेकी।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन एवम् घटनायें प्रत्येक भारतीय के लिये महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्रता दिलाने के लिये जन–जन में क्रान्ति की ज्वाला जल रही थी जिसको तत्कालिन साहित्य से सम्बन्धित प्रत्येक महत्वपूर्ण भारतीय भाषायें एवं बोलियों में अपने इतिहास लेखन से स्वर्णिम अक्षरों में संरक्षित किया। स्वतन्त्रता से सम्बन्धित घटनायें स्थान, पात्र एवं दिनांक सदियों तक इतिहास को बताते रहेगें। उन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों में से अग्रगण्य, भारतीय जनमानस के पुरोधा एवं सम्पूर्ण ब्रिटिश सामाज्य को जड़ से उखाड़ फेकने में सफल राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी का चरित्र भारतीय भाषाओं की अमूल्य धरोहर है।

भारत की स्वतंत्रता में गान्धी जी के संघर्ष एवं योगदान को लगभग सभी भारतीय भाषाओं में संकलित किया गया है। अतः भारतीय सभ्यता और संस्कृति की वाहक रही संस्कृत भी इस पुण्यकर्म में स्वयं को पिछे क्यों रखती। एतदर्थ नव संस्कृत लेखन में बहुत से ऐसे कवि रचनाकार हुये हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से महात्मा गान्धी के चरित्र को अमर कर दिये है। जिसमें– पं0 क्षमाराव, श्रीनिवास ताड़पत्रीकर, भगवदाचार्य, शिवणोणिन्द त्रिपाठी, साधुशरण मिश्र, आचार्य मधुकर शास्त्री, श्रीधरभास्कर वर्णेकर, ए0सी0 फ्रिटास, द्वारका प्रसाद त्रिपाठी, बोम्मकण्ठी रामलिंग शास्त्री, मथुरा प्रसाद दीक्षित एवं रतिनाथ झा इत्यादि ने, कोई महाकाव्य, खण्डकाव्य, गद्यकाव्य, नाटक, कहानी उपन्यास, प्रकीणर्क कविता इत्यादि विधाओं में रचनायें करके अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किये हैं। इन्हीं उपरोक्त रचनाकारों द्वारा लिखित काव्य ग्रन्थों की एक विवेचनात्मक दृष्टि निम्न हैं–

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर स्वतंत्रता दिलाने के अग्रदूत महात्मा गान्धी के चरित्र को संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम पं0 क्षमाराव ने अपनी काव्य रचना सत्याग्रह गीता, संघर्षों एवं सिद्धान्तों को लिपिबद्ध किया गया है– सन् 1932 ई0 में प्रकाशित सत्याग्रह गीता मूलतः महात्मा गान्धी जी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

के अफ्रीका प्रवास एवं वापसी करके उनके प्रारम्भिक संघषों आन्दोलनों एवं विचारों को संकलित किया गया है। ब्रिटिश शासन के दुराचारों एवं अनितिपूर्ण कार्यों के परिणाम स्वरूप प्रत्येक भारत की स्थिती दयनीय हो गयी थी चाहे वह किसान वर्ग का हो या व्यवसायी, सभी लोग एक ऐसा नेता की लालसा लिये कार्य कर रहे थे जो उनको अंग्रेजों की क्रूरता से मुक्ति दिलाये। ऐसे समय में महात्मा गान्धी का भारत में आगमन एवं उनके द्वारा किये गये आरम्भिक आन्दोलनों को बड़े ही विद्वतापूर्ण एवं लालित्यपूर्ण शैली में पं0 क्षमाराव ने अपने इस काव्य रचना में वर्णित किया है।

पं0 क्षमाराव द्वारा रचित उत्तरसत्याग्रह गीता, इन्हीं के द्वारा रचित सत्याग्रह गीता की द्वितीय पुस्तक है। जिसका प्रकाशन सन् 1948 में किया गया। इस द्वितीय पुस्तक का कथानक महात्मा जी का यरवदा जेल से छुटकर इरविन से मिलना, नमक आन्दोलन, गोलमेज सम्मेलन परिषद् में भाग लेना पूना समझौतें से सम्बन्धित डॉ0 भीमराव अम्बेडकर से मिलना एवं भारतीय समाज में फैली जातिगत अस्पृश्यता, सामाजिक असमानता एवं भेदभाव इत्यादि के साथ स्वतंत्रता प्राप्ति तक के घटनाक्रम को कुल 47 अध्यायों में विभक्त करते वर्णित किया गया है। इस कड़ी की दूसरी पुस्तक जो कुल 54 अध्यायों में विभक्त स्वराज्य–विजयम का प्रकाशन सन् 1949 ई0 में किया गया जिसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में उत्पन्न उथल–पुथल, धार्मिक दंगे–राष्ट्रविभाजन इत्यादि घटनाओं में महात्मा गान्धी के चरित्र को बड़ी ही सुन्दर ढंग से विश्वसाहित्य के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

बापू के संघर्षों से जुड़ी इस कड़ी की तृतीय पुस्तक स्वराज–विजयम नाम से प्रकाशित हुई जिसका वर्ण्य विषय ''राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये बापू के द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्र में अहिंसात्मक आन्दोलनों के साथ–साथ भाई चारे की भावना एवं राष्ट्र एकता अखण्डता को बनाये रखना था। गान्धी के अखण्ड भारत के स्वप्न को मुहम्मद अली जिन्ना ने धार्मिक उन्माद फैलाकर नष्ट कर दिया। इसके साथ ही साथ इस ग्रन्थ में द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारत वर्ष की स्थिति एवं संकटग्रस्तता का बहुत ही मार्मिक वर्णन पं0 क्षमाराव ने किया है। पं0 क्षमाराव ने महात्मा गान्धी के मुख्य सिद्धान्तों को समस्त पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रशंसनीय कला है जिसमें गान्धी के द्वारा समस्त विश्व में शान्ति स्थापना के लिये पूर्ण स्वराज की बात कही है।

गान्धी विषयक रचनाओं में सन् 1940 ई0 में श्रीनिवास ताड़पत्रीकर द्वारा रचित एवं 'ओरिएण्टल बुक एजेन्सी'' से प्रकाशित पुस्तक गान्धी गीता का नाम आता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में कुल 24 अध्याय हैं जिसमें गान्धी जी के समग्र जीवन संघर्ष, आदर्श, सिद्धान्त, वकतव्य एवं उनकी शिक्षाओं का वर्णन बहुत रमणीक ढंग से देखने को मिलता है। उनके आदर्शों एवं सिद्धान्तों का प्रभाव कवि के मन पर पूर्ण पड़ा दिखता है–

''ऊँ आतार्य प्रतिबोधितां भगवता गान्धी मुखेन स्वयं
सघः संग्रन्थितां यथार्थमतिना लोकस्य चोद्वीपिनीम्।
सत्यार्थ प्रतिपादनी भगवतीं राष्ट्रैक्यसंवादिनी
मम्ब त्वामनुसंदधामि विमले गीतेऽनृतद्वेषिणीम्।।– गान्धी गीता –1/1

वीररस की प्रधानता के साथ सम्पूर्ण गान्धी गीता का कथानक स्वतन्त्रता संग्राम की घटनाओं पर आधारित है। इसमें गान्धी द्वरा किये गये दाण्डीमार्च से लेकर उनके मरणोपरान्त तक का वर्णन है। परतन्त्रता

के क्या दुष्परिणाम हो सकते है इसका विवेचन करते हुये शीघ्र ही स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये किये गये प्रयासों पर प्रकाश डाला गया है।

महात्मा गान्धी के अदम्य साहस ने एवं कर्म निष्ठता ने उनकी सम्पूर्ण भारत में लोकनायक के रूप में सिद्ध किया– जिसका वर्णन प्रस्तुतकाव्य ग्रन्थ में देखने को मिलता है–

कर्मचन्द्रसुतं धीरं मोहनं लोकनायकम्
महात्मानं सतां श्रेष्ठं गान्धी बन्दे जगत्गुरुम्।। गान्धी गीता – 1/2

बापू के महात्म्य के वर्णन की श्रृंखला में श्रीमद् भगवदाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ ''श्री महात्मागान्धीचरितम्'' उनकी जीवन की तीन महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित तीन खण्डों में विभक्त है–

1. भारत–पारिजातम्
2. पारिजातापहारम्
3. पारिजातसौरभम्

उपरोक्त तीनों खण्डों की विषयवस्तु अलग–अलग है। जैसे– प्रथम में स्वदेश एवं देशवासियों की रक्षा हेतु गान्धी द्वारा किये गये प्रयासों का वर्णन भारत–पारिजातम् के नाम से जाना जाता है। द्वितीय खण्ड में अंग्रेजों द्वारा गान्धी जी का अपहरण कर लेने के कारण इसका नाम पारिजातापहारम् रखा गया है। तृतीय खण्ड में महात्मा गान्धी की प्रशस्ति न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में फैली है अतः इस खण्ड का नाम पारिजात सौरभम् रखा गया है। प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने जन–जन में अपनी मातृभूमि के प्रति आस्था जगाना राष्ट्रीय भावना को जागरित करना एवं प्राणीमात्र में व्यवहारिक शिक्षा का संचार भरना ही अपना उद्देश्य बनाया है।

महात्मा गान्धी के व्यक्तित्व को ऐतिहासिकता के रस में अवगाहित कर आठ सर्गों से युक्त महाकाव्य श्री गान्धीगौरवम् का प्रणयन श्री शिवगोविन्द त्रिपाठी ने किया जिसके माध्यम से कवि ने गान्धी व्यक्तित्व में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की महत्ता को एवं सत्य, अहिंसा, अवज्ञा आन्दोलन, असहयोग, गोलमेज सम्मेलन, पुणपैक्ट इत्यादि घटनाओं का सजीव चित्रण किया गया है। श्री गान्धीगौरतम् महाकाव्य में रसादि भाव पक्ष एवं प्राकृतिक चित्रण अत्यन्त संक्षिप्त है। लेकिन नायक के चरित्र और छन्द योजना में जो कौशल दिखाया गया है। वह निश्चित ही सराहनीय है। नायक के चरित्रनिर्माण में तत्कालिन घटनाओं का सजीव चित्रण एवं जीवन्तता के साथ गान्धी के व्यक्तित्व को अत्यन्त दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

इसके अननन्तर श्री साधुशरण मिश्र द्वारा रचित श्री गान्धीचरितम् 19 सर्गों से युक्त एक महाकावय के प्रारम्भ में ही कवि ने नायक के चरित्र को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

मातुवोसं गृहं व्रजन विनयिनामग्रेसरोमोहनः
कारुण्यामृतवारिधेः सुतजनाभीष्टार्थसिद्धेरसौ।
किम्बाम्बेह वादिस्यतीति मनसा शंका दधानः शनै–
राप्नोत् तत् सहसाग्रजः समुदितैर्मित्रैः प्रियैर्भाक्तिमान्।। श्री गान्धी चरितम् 2/128

प्रस्तुत काव्य में कवि का उद्देश्य परतन्त्रता को राष्ट्र की प्रगति में बाधक बताते हुये स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये सम्पूर्ण देशवासियों को कृत संकल्प करना है। तथा एक नायक के माध्यम से देशवासियों में स्वाभिमान की भावना, राष्ट्र के प्रति भक्ति भावना जागृत करना अपने अधिकारों के लिये सजग रहना, भारतीय संस्कृति एवं कला की रक्षा करना, एकता की भावना का विस्तार करना इत्यादि है।

इसके अनन्तर महात्मा गान्धी के चरित पर लिखित खण्डकाव्य गान्धी चरितम् प्राप्त होती है। जिसके रचनाकार श्री ब्रह्मानन्द शुक्ल हैं। प्रस्तुत खण्डकाव्य 119 पद्यों से युक्त है। तथा नायक के उदन्त गुणों से युक्त होने के फलस्वरूप ही इस खण्डकाव्य का नामकरण गान्धीचरितम् पड़ा है। प्रस्तुत काव्य में एक ओर अपने देश की रक्षा के लिये आत्मसमर्पण की भावना है तो दूसरी तरफ शोक एवं आत्मग्लानि का भाव भी समाहित है उत्साह भी है और भक्ति भावना भी। इस काव्य का प्रधान रस करुण रस है। इसमें अपनी मातृभाषा संस्कृति एवं प्राचीन वेदों, वाल्मीकि आदि महषियों के प्रति आदर एवं आस्था का भाव सन्निहित है। यह क्रियाशील रहने और विषयों के प्रति अनासक्त रहने की प्रेरणा देता है। इसमें सदाचार का उपदेश और सत्य अहिंसा जैसे श्रेष्ठ धर्मों के पालन पर जोर दिया गया है। यह काव्य जहाँ हमें समानता में व्यवहार करने की शिक्षा देता है तो साथ–साथ अपने कर्तव्यपथ पर दृढ़ता से अग्रसर होने को भी प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त इसमें देश की दरिद्रता एवं दुःख से छुटकारा दिलाना है। काव्य में राष्ट्रीय भावना की प्रधानता है। वेदों के प्रति आस्था रखना, पाश्चात्य नृत्यादि से विभुख होना, एकता की भावना को बढ़ावा देना, सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलना, कारागृह की यातना, सहना, देशहित में अपने प्राणों की परवाह न करना, और लड़ते–लड़ते युद्ध भूमि में वीरगति को प्राप्त होना इत्यादि इस खण्डकाव्य की प्रमुख विषय है।

इसी क्रम में यज्ञेश्वर शास्त्री कृत भारत राष्ट्र गौरवम् में कवि ने समान्य जनमानस की बोधगम्य शैली में गांधीचरित को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये भारत राष्ट्र गौरवम् मुक्तक काव्य की रचना की। जिससे राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति महात्मा गान्धी के जीवन चरित एवम् उनके प्रेरणादायी कार्यों, समाज के उत्थान के लिये सर्वजनहिताय सिद्धान्तों को प्रस्तुत कर उनके व्यक्ति को और प्रकाशित करने का कार्य किया है।

गान्धीगौरव गाथा के क्रम में डॉ0 रमेश चन्द्रशुक्ल द्वारा रचित प्रबन्धात्मक खण्डकाव्य गान्धीगौरवम् में बापू के गौरवपूर्ण एवम् राष्ट्र के लिये अत्यधिक बहुमूल्य कार्यों का वर्णन किया गया है। इसमें महात्मा गान्धी के इग्लैण्ड प्रवास, अध्ययन एवम् भारतीय सभ्यता, संस्कृति, उत्थान–पतन एवं राष्ट्र को परतन्त्रता की बेड़ियों से स्वतन्त्रता की अबाधित प्रवाह तक पहचाने के प्रयासों का वर्णन किया गया है।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि महात्मा गान्धी का व्यक्तित्व स्वतन्त्रता सेनानियों को सम्पूर्ण भारत की समस्त भाषाओं एवं बोलियों में वर्णित करके सम्पूर्ण समाज को यह बताने का अथक प्रयास किया गया है कि– न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठ, धैर्यशाली, सत्याग्रही, विवेकी, एकता के पक्ष पाती, अहिंसापालक महात्मा गान्धी, अपने विचारों एवं सिद्धान्तों से सदैव हमारे मनमस्तिष्क में स्थान बनाये रखेंगे। उनके विचारों की प्रेरणा से समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवन में चतुर्मुखी उन्नति को प्राप्त करेगा।

संदर्भ

1. श्रीगान्धीचरितम्– श्री साधुशरण मिश्र
2. उत्तर सत्याग्रह गीता– पं0 क्षमाराव
3. स्वराज विजयम् – पं0 क्षमाराव
4. गान्धी गीता– श्रीनिवास ताड़पत्रीकर
5. श्रीमहात्मा गान्धी चरितम्– श्री भगवदाचार्य
6. श्री गान्धी गौरवम् – श्री शिवगोविन्द त्रिपाठी
7. श्री गान्धी शतकम्– आचार्य रतिनाथ झा